श्री वृषभनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति : श्री वृषभनाथ विधान

आशीर्वाद : संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित
आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज

कृतिकार : अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रसंग : मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का
स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023

संयोजक : बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

संस्करण : तृतीय, 1100 प्रतियाँ

सहयोग राशि : 30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्रकाशक : विद्या सुव्रत संघ

प्राप्ति स्थान : १. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
Mob.-9425128817
२. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889

मुद्रक : विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी ॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ विधान

जय बोलिये

आदिब्रह्मा,
आदि परमेश्वर,
आदि जिनेश्वर,
आदि सर्वेश्वर,
आदि जगदीश्वर,
आदि महेश्वर,
आदिधर्म के अधिपति,
कैवल्यकमलापति,
परमपूज्य
श्री वृषभनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : जहाँ डाल डाल पर)

जो आदिकाल में, आदि प्रवर्तक आदि ब्रह्म बन आये।
वो आदिनाथ कहलाए॥
जो सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य धर, धर्म ध्वजा फहराये।
वो आदिनाथ कहलाए॥

जब भोगभूमि की हुयी समाप्ति, कल्पवृक्ष जब खोये।
जब बेघर होकर प्राणी भटके, भूखे प्यासे रोये,
भूखे प्यासे रोये॥
तब षट्कर्मों की देकर शिक्षा, ''ऑर्ट ऑफ लिविंग'' सिखाए॥
वो आदिनाथ कहलाए॥1॥

दे दिये ''अहिंसा परमो धर्मः'', जीव मात्र को शिक्षा।
खुद जियो और सबको जीने दो, है साँची जिन दीक्षा,
है साँची जिन दीक्षा।
कृषि करो अहिंसक गौपालन या, ऋषि बनना धर्म बताए॥
वो आदिनाथ कहलाए॥2॥

दी सभी कलायें सब विद्यायें, योग अंक अक्षर कीं।
फिर मुक्ति वधू को पाने अपनी, बिटियों को साक्षर कीं,
बिटियों को साक्षर कीं।
अब 'सुव्रतसागर' आदिनाथ सम 'विद्या' पर ललचाए॥
वो आदिनाथ कहलाए॥3॥

श्री वृषभनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥

मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.......)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।

तुम्हारी भक्ति का चन्दन, हरे भव ताप बढ़चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं.....।

सभी संसार के पद तो, दिये आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

सुगन्धी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुन करके।
करो रोशन हमारा मन, उतारे आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

जलायें धूप कर्मों की, चढ़ायें धूप जो स्वामी।

वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हरलो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिये भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुयी, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

माघ कृष्ण चौदश दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गये, हम पाये त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

गुण-गण जो पहचानते, वे गाते गुण गीत।
गुण-गण को पहचानने, आदि प्रभु मनमीत॥

(सखी)

जय आदिनाथ जिन स्वामी, जय सुखदाता शिवधामी।
जय गीत गान की गाथा, जय धर्म कथा वरदानी॥ 1॥

जब दुनियाँ भटक रही थी, भोगों को गटक रही थी।
जब कल्पवृक्ष ना पाये, तो गम में मटक रही थी॥ 2॥

जब चारों ओर अँधेरा, पग-पग पर दुख का डेरा।
जब जीवन की नैया को, भव-तूफानों ने घेरा॥ 3॥

तब ही जिनवर तुम आये, जीवों को धैर्य दिलाये॥
षट्कर्मों को बतला के, हितपथ दे दीप जलाये॥ 4॥

तुमने सबसे पहले ही, जिन धर्म-ध्वजा फहरायी।
तब ही तुम प्रथम जिनेशा, हो हम सबको सुखदायी॥ 5॥

फिर अंक और अक्षर की, निज बिटियों को दी शिक्षा।
कृषि करो सभी जन अथवा, ऋषि बनो भजो लो दीक्षा॥ 6॥

यों शिक्षा देकर ले ली, जिन-दीक्षा पाप हरण को।
दे मोक्षमार्ग की शिक्षा, सज बैठे मुक्ति वरण को॥ 7॥

मुक्ति से ब्याह रचाकर, शिव मोक्ष राज्य को पाये।
हम चलें आपके पथ पर, सो पूजन पाठ रचायें॥ 8॥

हम पूजन पाठ न जानें, नहि भक्ति भाव पहचानें।
'सुव्रत' हैं भक्त निराले, बस शीश झुकाना जानें॥ 9॥

शीश झुके तो ईश का, नहीं दूर शिवधाम।
तभी करें आदीश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रथम वलय पूजन

स्थापना

वृषभदेव भगवान् के, हैं अनंत उपकार।
धर्म धुरन्धर नाथ को, पूजे सब संसार॥

(हरिगीतिका)

हे नाथ! आदीश्वर प्रभो हे !, दुख विनाशी देव जी।
हम अर्चना करते तुम्हारी, सुख मिले स्वयमेव ही॥
मन के मनालय आइये, अब हम मनाते भक्ति से॥
बस भावना ये है हमारी, हो परीणय मुक्ति से॥

(दोहा)

मनो वचन व्याकुल हुआ, आकुल हुआ शरीर।
भक्ति सुमन स्वीकार हो, मिले हमें भवतीर॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव ....।

(पुष्पांजलिं.......)

(चौपाई)

मन-वच-काया के हम रोगी, आप स्वस्थ आतम के भोगी।
बनें निरोगी, समदर्शन दो, आदिप्रभु को जल अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं.....।

राग द्वेष अघ मोह पाप से, हम तपते संसार ताप से।
शांति सुधा सुख चिदानंद दो, आदिप्रभु को भेंट गंध हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

वैभाविक परिणति में आतम, भूल रहा अपना शुद्धातम।
आतम को परमातम पद दो, आदिप्रभु को पुंज अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

काम भाव का फूल विषैला, करे हमारा आतम मैला।
काम हरण कर ब्रह्म रमण दो, आदिप्रभु को पुष्प अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

प्रभु की चाय ज्ञान का नास्ता, आतम भोजन शिव का रास्ता।
भोग चेतना के कारण दो, आदिप्रभु को चरु अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

जब सोये तब हुआ अँधेरा, जब जागे तब हुआ सबेरा।
हमें जगाओ ज्ञान किरण दो, आदिप्रभु को दीप अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं .....।

धूल धूप जो सह नहिं पाते, कर्म धूल वो कौन? नशाते।
कर्म नशाने शुभाचरण दो, आदिप्रभु को धूप अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्रायअष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

सुख नहिं चाहें दुख नहिं चाहें, चाहें मात्र भक्ति की राहें।
हमें भक्ति फल शुद्ध शरण दो, आदिप्रभु को फल अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अर्घ सँजोया जिन अर्चन को, भाव यही बस निज दर्शन हो।
निज दर्शन को समवसरण दो, आदिप्रभु को अर्घ अर्पण हो॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

प्रथम वलय अर्घ्यावली

(समवसरण की बारह सभाओं का वर्णन)

(चौबोला)

प्रथम सभा मुनियों की होती, जहाँ विराजित मुनि जन हों।
दिव्य देशना प्रभु की सुनने, आकुल व्याकुल तन मन हों॥
तत्त्व भेद-विज्ञान प्राप्त कर, चिदानंद का वरण करें।
चिदानंद को पाने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 1॥

ॐ ह्रीं वैभाविकपरिणतिविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दूजी सभा कल्पवासी की, देवी जन की शोभित हों।
जहाँ देवियाँ कमलापति के, चरण कमल पर मोहित हों॥
करें अर्चना सुनें देशना, बुद्धि विपर्यय हरण करें।
बुद्धि विपर्यय हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 2॥

ॐ ह्रीं बुद्धिविपर्ययविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तीजी सभा आर्यिकाओं के, साथ श्राविकाओं की हो।
मुक्तिरमा का देख स्वयंवर, आत्म सम्पदा पातीं वो॥
नारी बाधाएँ हरने को, मिथ्यादर्शन हरण करें।
नारी बाधा हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 3॥

ॐ ह्रीं नारीबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौथी सभा भवनवासी की, भरें देवियाँ आकर के।
प्रभु की अर्चा चर्चा करतीं, नाच-नाच गा-गाकर के॥
जहाँ उन्हीं के भव-भवनों के, भ्रमण हटें भव-बंध झड़ें।
तन-कारागृह हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 4॥

ॐ ह्रीं भवन-भूमिविवादविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पंचम सभा खचाखच भरतीं, व्यन्तर सुर की सुन्दरियाँ।
अपना जीवन धन्य करें वे, खिला-खिला अंतर कलियाँ॥
निरख-निरख चैतन्य धाम वे, बाधा संकट हरण करें।
अन्तर बाधा हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 5॥

ॐ ह्रीं भूतनी-डाकिनीबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छठी सभा में ज्योतिष देवीं, छटा बिखेरें सज-धज के।
पुद्गल की पर्यायें भूलें, प्रभु के चरणा भज-भज के॥
प्रभु की उपमातीत चमक को, पाने वे तो मचल पड़ें।
आत्मज्योति को पाने हम भी,आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 6॥

ॐ ह्रीं नवग्रहभयविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सप्तम सभा भवनवासी के, देव निरंतर भरते हैं।
जय-जयकारों के नारों से, बाल-क्रिया वे करते हैं॥
जड़-क्रिया का विभ्रम छोड़ें, अहो! ज्ञान की क्रिया लखें।
जड़-क्रिया विभ्रम तज हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 7॥

ॐ ह्रीं जड़क्रिया-विभ्रमबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अष्टम सभा भरें व्यन्तर सुर, अपना विचरण वे तजते।
कौतूहल चेतन का लखकर, कौतूहल अपना तजते॥
तत्त्व ज्ञान में विचरण को वे, चिन्मयप्रभु के चरण भजें।
तत्त्व-ज्ञान को पाने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 8॥

ॐ ह्रीं भूत-व्यन्तरबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नौवी सभा भरें ज्योतिष सुर, चमक धमक अपनी भूलें।
निज रत्नों को पाने आतुर, जिनवर के कब पद छूलें॥
अविनाशी अक्षय सुख पाने, नश्वर ज्योतिष शरण तजें।
सुखाभास को तजने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 9॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दसवीं सभा कल्पवासी के, देव भरें गुणगान करें।
दिव्य द्रव्य ले भजन गीत गा, मन मोहक सम्मान करें॥
दिव्य दृष्टि का देख समागम, जिन चरणों का वरण करें।
दृष्टि विभ्रम हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 10॥

ॐ ह्रीं द्रव्यगुणपर्यायदृष्टिविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारहवीं जो सभा मनोहर, मानव चक्री भव्य भरें।
जिनमत पालक ऐलक-क्षुल्लक,श्रावक जिनगुण काव्य करें॥

हिल–मिलकर वात्सल्य प्रेम से, परमेष्ठी की शरण गहें।
पुद्गल बन्ध हरण को हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें ॥ 11 ॥

ॐ ह्रीं पारिवारिककलहविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारहवीं जो सभा सुशोभित, तिर्यंचों के वर्ग करें।
सर्प नेवला गाय शेर सब, जन्मजात के बैर हरें॥
संयम का साम्राज्य देखकर, वध–बन्धन के कष्ट हरें।
छेदन–भेदन हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥ 12 ॥

ॐ ह्रीं छेदन–भेदनपीड़ाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रथम वलय जयमाला

(दोहा)

समवसरण आसीन हो, दिया तत्त्व उपदेश।
जयमाला गुणगान हो, जय–जय आदि जिनेश॥
जयमाला के नाम हम, करें भक्ति गुणगान।
ज्ञान मिले वैराग्य भी, यही मिले वरदान॥

(ज्ञानोदय)

रंग बिरंगी दुनियाँ में हम, रंग बिरंगे सपने ले।
दर–दर ठोकर खाकर भटकें, भाव पराये अपने ले॥
जगत् जाल की माया में हम, काया पाकर खुशी हुये।
माया अपनी हुई न लेकिन, छाया पाकर दुखी हुये॥ 1 ॥

जिसको हमने माना अपना, उससे ही दुख पाया है।
इसमें दोष किसे हम दे दें, कर्मों की सब माया है॥
नहीं किसी से कोई शिकायत, जो बोया वो काट रहे।
कुछ भी कह ले दुनियाँ लेकिन, पाप नरक के घाट रहे॥ 2 ॥

पापों में हम यों फूले कि, समवसरण भी भूल गये।
भूले बीस हजार सीढ़ियाँ, तोरण द्वारे भूल गये॥
मिले मोक्ष सीढ़ी फिर कैसे, मोक्ष कपाट खुलें कैसे?
धूलिसाल का कोट भुलाया, तो फिर खोट नशें कैसे?॥ 3 ॥

भूले मानस्तंभ आपका, मान तभी तो गला नहीं।
भूले नाटक शालायें तो, जग का नाटक टला नहीं॥
कूप बावड़ी भूल गये तो, जगत्-कूप में डूब रहे।
गलियों पर चलना भूले तो, भव गलियों में घूम रहे॥ 4॥
आठ भूमियाँ भूल गये तो, अष्टम भू पायें कैसे?।
धूप कुंड जब भुला दिये तो, आतम महकायें कैसे?॥
बारह सभा भुला डाली तो, सिद्ध सभा पायें कैसे?।
भुला दिया जब धर्मचक्र तो, भव चक्कर नाशें कैसे?॥ 5॥
भूले-भूले तीनों कटनी, विषयों की चटनी चख के।
गणधर गुरु का ज्ञान भुलाया, स्वारथ की मथनी मथ के॥
कमलासन जिनवर को भूले, प्रातिहार्य अतिशय भूले।
दिव्य देशना उपकारों को, भूले तत्त्व विषय भूले॥ 6॥
क्या-क्या कथा कहें पापों की, पाप सदा आबाद रहा।
जिसे याद रखना था वह तो, भूले बाकी याद रहा॥
भूले सब बस याद रहे ये, तेल नमक अथवा लकड़ी।
इनमें आतम ऐसी जकड़ी, जैसे जकड़ी हो मकड़ी॥ 7॥
कृपा हुई या पुण्य भाग्य क्या, इसका हमको ज्ञान नहीं।
किन्तु आपकी पूजन करके, दिखा मोक्ष सोपान यहीं॥
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, मकड़ी जैसा जाल हरो।
हमें न भूलो क्षमादान दो, निज सम मालामाल करो॥ 8॥

(दोहा)

भला करो तो लाभ हो, याद दया दे दान।
आदिनाथ चारों दिये, अतः बने भगवान्॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय प्रथमवलय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

द्वितीय वलय पूजन

स्थापना (दोहा)

पद पंकज आदीश के, दिये मुक्ति का धाम।
यों आदीश्वर देव को, बारम्बार प्रणाम॥

(शिखरिणि) (लय : महावीराष्टकवत्)

करें भक्ति प्राणी, विनय कर पूजें चरण भी।
मिले युक्ति ऐसी, शिव महल पायें शरण भी॥
हमारी पूजा को, जगत्-पति स्वीकार कर लो।
हमारी नैया भी, तुरत भव से पार कर दो॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं.......)

(चामर) (लय : पार्श्वनाथपूजन....नीर गंध अक्षतान्....)

जन्म मृत्यु की व्यथा हरो करो सुखी हमें।
नीर ये चढ़ा रहे मिले क्षमा सखी हमें॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

पाप ताप दूर हो विकार का विनाश हो।
गंध ये चढ़ा रहे चरित्र का विकास हो॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चदनं.....।

भार भूत है मिटे विभाव की विभासना।
अक्षतान को चढ़ा मिले सुभाव साधना॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

पुष्प को चढ़ा रहे स्वरूप का पराग दो।
काम बाण नाश होय चित्-स्वरूप बाग दो॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं.....।

भोग-भोग भोग को बढ़ा रहे क्षुधा व्यथा।
भोग त्याग को मिले सुधा मिटे व्यथा कथा॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं .....।

दीप का प्रकाश रोज आरती उतारता।
दो जिनेश जो प्रकाश मोह अंध तारता॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

कर्म दूर हो अतः सुधूप को चढ़ा रहे।
शुद्ध भाव प्राप्ति को जिनेन्द्र को मना रहे॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

धर्म ध्यान तत्त्व-ज्ञान छाँव आपकी मिले।
गुच्छ ये फलोंमयी चढ़ा रहे खुशी मिले॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

आठ द्रव्य ठाठ से सजाए भक्ति भाव से।
अर्घ भेंटने किया विहार दूर गाँव से॥
आदिनाथ की विशाल अर्चना रचाइए।
ऋद्धि-सिद्धि पाय, कष्ट वेदना नशाइए॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

द्वितीय वलय अर्घ्यावली

(10 बाह्य परिग्रह) (विष्णु - लय : बड़ी बारहभावना)

बीज धान्य की फसल जहाँ हो, उसे क्षेत्र माना।
सुख-दुख के वे बुनते रहते, नित ताना-बाना॥
बनें आप सम हम भी त्यागी, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 1॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भवन-मकानों की रचनाएँ, वास्तु कहीं जातीं।
इनमें फँसकर आत्माएँ फिर, मोक्ष नहीं पातीं॥
तजें आप सम हम भी वास्तु, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 2॥

ॐ ह्रीं वास्तु-भवननिवास-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चाँदी के आभूषण सिक्के, वो हिरण्य सारे।
आदिनाथ सम चाँदी तजकर, चिदानंद पा रे॥
पग-यात्री कर-पात्री हों हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 3॥

ॐ ह्रीं रजतसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सोने में फँसकर सोने सी, आतम को भूले।
सोने को खोने पर आतम, परमातम छू ले॥
नाथ! आप सम स्वर्ण तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 4॥

ॐ ह्रीं स्वर्णसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गौधन गजधन आदिक धन हैं, यह आगम कहता।
यही पुण्य फल इनमें फँसकर, दुख आतम सहता॥
नाथ! आप सम धन त्यागें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 5॥

ॐ ह्रीं गोधन समस्या विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्वार बाजरा गेहूँ आदिक, बीज धान्य होते।
इनके त्यागी इस दुनियाँ में, जगत् मान्य होते॥
नाथ! आप सब धान्य तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 6॥

ॐ ह्रीं धान्यखादबीजसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नौकरानियाँ पत्नी आदिक, विष बेली दासीं।
पुण्य प्रसाद इन्हें अपनाना, झंझट की राशीं॥
तुम सम दासी त्याग सकें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 6॥

ॐ ह्रीं स्त्री-दासीप्रथाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नौकर सेवक पति आदिक सब, दास कहाते हैं।
'पुण्यफला' सांसारिक सुख जो, त्रास बढ़ाते हैं॥
नाथ! आप सम दास तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 8॥

ॐ ह्रीं पुरुष-दाससमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ऊनी रेशम कपासादि के, वस्त्र कुप्य मानो।
वस्त्रों में गद्दी पर कैसे, आत्म ध्यान जानो॥

अंबर तजकर बनें दिगम्बर, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 7॥

ॐ ह्रीं कुप्य (वस्त्र) समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सोना पीतल ताम्र आदि के, बर्तन भाण्ड कहे।
मिर्च मसालों में आतम रस, किसने कहो चखे॥
नाथ! आप सम भाण्ड तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 10॥

ॐ ह्रीं भाण्ड (स्थानान्तरण) समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(अंतरंग परिग्रह 14)

देव-शास्त्र-गुरु तत्त्व विषय की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन परिग्रह बन के, भाव गिरा जायें॥
तुम सम बस निर्दोष बनें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 11॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्रोध कषायों की ज्वाला से, आतम कली जली।
तब चैतन्य क्रोध से जलकर, फिरती गली-गली॥
तुम सम क्रोध कालिमा त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 12॥

ॐ ह्रीं क्रोधसर्प-विषविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मान शिखर से रावण कौरव, कंश गिरे नीचे।
रहे न इनके वंश जगत् में, हम क्या-क्या सीखे ?॥
नाथ! आप सम मान तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की,हमको दीक्षा दो॥ 13॥

ॐ ह्रीं मान-ईर्ष्याभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ओ! री! माया तेरी छाया, सबको घुमा रही।
पिला-पिला कर विषयों का विष, सबको डुबा रही॥
तुम सब निश्छल हों तज माया, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 14॥

ॐ ह्रीं माया-वातरोग (गठिया) विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लोभ बना जब लोक प्रदर्शन, निज दर्शन भूला।
लोभी की क्या? दुनियाँ होगी, क्यों रे तू फूला॥
नाथ! आप सम लोभ तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 15॥

ॐ ह्रीं लोभस्वार्थभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हास्य नाम का नो-कषाय जो, सबको हँसा रहा।
हँसने से जग हम पर हँसता, परिग्रह वसा रहा॥
नाथ! आप सम हास्य तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की,हमको दीक्षा दो॥ 16॥

ॐ ह्रीं हास्यपरिग्रहविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पंचेन्द्रिय के विषय सुखों में, जो आसक्त हुआ।
राग रूप रति नो-कषाय वह, परिग्रह बना हुआ॥
नाथ! आप सम रति हम त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की,हमको दीक्षा दो॥ 17॥

ॐ ह्रीं रति-आसक्तिभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

द्वेष भाव अलगाव रहा जो, कहो अरति उसको।
परिग्रह भाव बना दुख देता, दे सद्गति किसको॥
नाथ! आप सम अरति तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 18॥

ॐ ह्रीं अरतिबहिष्कारभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उपकारक के विरह भाव को, शोक कहा जाता।
परिग्रह बनकर शोक क्लेश दे, आर्त्त रौद्र दाता॥
नाथ! आप सम शोक तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 19॥

ॐ ह्रीं शोक-आकुलव्याकुलताभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सात तरह के डर से डरना, भय की यह गीता।
मिथ्यादृष्टि डरकर मरता, समदृष्टि जीता॥

नाथ! आप सम अभय बनें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 20॥

ॐ ह्रीं भय-अहितभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देख घिनौना घृणा हुई जो, वही जुगुप्सा है।
परिग्रह बनकर प्रेम हरे वह, अद्भुत किस्सा है॥
नाथ! आप सम तजें जुगुप्सा, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 21॥

ॐ ह्रीं जुगुप्साघृणाभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिन भावों से पुरुष जनों में, रमण-भावना हो।
रमें पुरुष जन में तो कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम नारी वेद तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 22॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-स्त्रीपर्यायविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिन भावों से नारी जन में, रमण-भावना हो।
रमें नारियों में तो कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम पुरुषवेद हम त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 23॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिन भावों से नर नारी में, रमण भावना हो।
बने नपुंसक तो फिर कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम वेद नपुंसक त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रंथ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥ 24॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद (असफलता) विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

द्वितीय वलय जयमाला

भरी पालड़ी झुक गयी, खाली ऊपर ओर।
पतन हमारा रोकने, अब तो थामो डोर॥
आदिनाथ सर्वोच्च हैं, तजकर परिग्रह संग।
गुण गाकर हम भक्त की, उड़ती रहे पतंग॥

(लय : अहो जगत् गुरुदेव...)

आदिनाथ जिनदेव, पाकर कृपा तुम्हारी।
पूजन कर जयमाल, गायें बने पुजारी॥
किन्तु परिग्रह राग, तुमसा छोड़ न पायें।
अतः अधोगति पात्र, बनकर दुख हम पायें॥ 1॥

कभी-कभी दस बाह्य, चौदह अंतर वाले।
पूरे हैं चौबीस, परिग्रह काले-काले॥
इनसे करके मोह, मोही हम कहलाये।
करें नवग्रह राज, हमको भव-भटकाये॥ 2॥

पूरा ही संसार, परिग्रह जोड़े-जोड़े।
तभी धधकता आज, खाये कोड़े-कोड़े॥
परिग्रह करके त्याग, सुलझे सभी समस्या।
छोड़ो जग जंजाल, सम्यक् करो तपस्या॥ 3॥

पर, निज वैभव भूल, पर-परिणति में उलझे।
परिग्रह की फिर गाँठ, कैसे अपनी सुलझे॥
जिन दर्शन कर आज, निज की अब सुध आयी।
खोलें अंतर गाँठ, सो जिन पूजन भायी॥ 4॥

पूजन का परिणाम, साक्षात् दर्शन पायें।
प्रभु चरणों में बैठ, रत्नत्रय अपनायें॥
धर कर भेदा-भेद, निज चैतन्य सँभालें।
हो निज में लवलीन, झट मोक्षालय, पालें॥ 5॥

(दोहा)

चाहे हम अनुकूल हों, चाहे हों प्रतिकूल।
आदिप्रभु सम हम रहें, यथा कमल के फूल॥

ॐ ह्रीं कैवल्यकमलापति श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय द्वितीयवलयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय नमो नमः॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् की, महिमा अपरंपार।
पूजे जो धर ध्यान वह, राग-द्वेष से पार॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्रनाम हुये जो, आदि प्रवर्तक कहलाये।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आये॥ 1॥

वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
एक माह जब उम्र शेष तब, नंदीश्वर का उत्सव कर॥
बाइस दिन की कर सल्लेखन, प्रथम स्वर्ग ललितांग हुये।
धर्मसहित ललितांग मरण कर,वज्रजंघ प्रिय पुत्र हुये॥ 2॥

वज्रजंघ श्रीमति रानी ने, दो चारण मुनि सत्कारे।
जो उनके ही अंतिम सुत थे, दिये पूज कर आहारे॥
इसी समय चारों मंत्री भी, नकुल व्याघ्र वानर शूकर।
मुनि से सुनकर जनम कथा सब, खुश थे मुनि चरणा छूकर॥ 3॥

आप आठवें भव तीर्थंकर, बन जब मोक्ष विराजेंगे।
तब श्रीमति श्रेयांस बनेगी, आठों भी शिव पायेंगे॥

वज्रजंघ श्रीमति इक रात्रि, दम घुटने से मरण किये।
पात्रदान से भोगभूमि में, दोनों आर्या आर्य हुये॥ 4॥
पात्रदान के अनुमोदन से, वहीं चार उत्पन्न हुये।
पात्रदान की महिमा सुनकर, हम सब भक्त प्रसन्न हुये॥
आर्य गया ऐशान स्वर्ग में, देव हुआ श्रीधर नामी।
उसी स्वर्ग में चारों जन्मे, उसी स्वर्ग आर्या जन्मी॥ 5॥
श्रीधर हुआ सुविधि केशव फिर, वज्रनाभि चक्रेश हुआ।
आठों जीव वहीं फिर जन्मे, श्रीमति तब धनदेव हुआ॥
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाये।
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थ सिद्धि पाये॥ 6॥
तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, वह अहमिन्द्र यहाँ आये।
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाये॥
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न दिये।
रत्नवृष्टि देवों ने की तब, नगर अयोध्या जन्म लिये॥ 7॥
तीन लोक के जीवों को तब, मिली शांति केवल पल भर।
इन्द्राज्ञा से शचि ने तब ही, मरुदेवी को मूर्च्छित कर॥
लिया गोद में ज्यों जिन बालक, तब सम्यग्दर्शन पाके।
दिये इन्द्र को भावी भगवन्, 'पुण्यफला' के गुण गाके॥ 8॥
ऐरावत हाथी पर लेकर, चला इन्द्र सौधर्म वहाँ।
सुमेरु पर्वत पाण्डुक वन में, मणिमय पाण्डुकशिला जहाँ॥
एक हजार आठ कलशों में, क्षीर सिन्धु का जल भर के।
किया जन्म अभिषेक वहाँ पर, पूर्व दिशा में मुख करके॥ 9॥
फिर सौधर्म इन्द्र ताण्डव कर, 'वृषभ' नाम रक्खा उनका।
हुआ सुनन्दा यशस्वती से, विवाह बंधन फिर जिनका॥
ब्राह्मी भरत सहित सौ सुत को, यशस्वती ने फिर जन्मा।
और सुन्दरी बाहुबली को, सुनो! सुनन्दा ने जन्मा॥ 10॥

ब्राह्मी तथा सुन्दरी को दे, अंक तथा लिपि विद्यायें।
पुत्र भरत वा बाहुबली को, दी बाकी सब शिक्षायें॥
वर्णाश्रम षट्कर्म बनाकर, पूज्य जिनालय बनवाये।
पिता राज्य अभिषेक करा के, तुमको राजा बनवाये॥ 11॥
नीलांजना अप्सरा का जब, नृत्य देख वैराग्य हुआ।
दिया भरत को राज्य तथा फिर, लौकान्तिक आगमन हुआ॥
देवों ने वैराग्य सराहा, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ।
बैठ सुदर्शन नाम पालकी, सिद्धार्थक वन गमन हुआ॥ 12॥
अहो! नमः सिद्धेभ्यः कहकर, पंचमुष्टि केशलौंच किये।
संग चार हजार राजा के, जिन दीक्षा ले धन्य हुये॥
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तब, छह माहों का योग धरा।
मरीचि ने मत कपिल बनाया, सभी भ्रष्ट थे हाल बुरा॥ 13॥
अन्तराय जब हुआ वर्ष भर, तो श्रेयांस सोम राया।
अक्षय तृतीया को इक्षु रस, देकर दानतीर्थ पाया॥
पंचाश्चर्य हुये दाता घर, सबने जय-जयघोष किये।
एक हजार वर्ष तप करके, घातिकर्म प्रभु नाश दिये॥ 14॥
समवसरण में तीर्थंकर प्रभु, केवलज्ञानी धरम दिये।
रत्न त्याग तब प्रथम भरत जी, जिन अर्चन कर नमन किये॥
भव्य पुण्य से विहार करके, धर्मचक्र को चला दिया।
फिर कैलाश धाम पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिया॥
काल दोष से समय पूर्व में, लेकर जन्म मोक्ष पाये।
करके उत्सव भक्त आपकी, पदवी पाने ललचाये॥
हम भी नाथ! आपके गुण गा, मना रहे आनंद अहो।
रागद्वेष भी मंद हुआ है, मुखर भक्ति का छंद प्रभो॥ 16॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानंद महा॥

पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥ 17॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।
तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शांति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥ 18॥

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् सम, उतरे कार्मिक भार।
यह पाने वरदान हम, बोलें जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री वृषभनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

थूबौन के आदीश जी, भेजे पिपरई गाँव।
जहाँ पार्श्व प्रभु की रही, हम पर मंगल छाँव॥
गर्मी वर्षा शीत में, भक्त भक्ति का वास।
वृषभनाथ विधान से, दुख दरिद्र हो नाश॥
दो हजार ग्यारह रहा, शनिदिन थर्टी फर्स्ट।
पिपरई में पूरा हुआ, हटे कर्म की डस्ट॥
'विद्या' गुरु को सौंप कर, जीवन का हर गीत।
'मुनिसुव्रतसागर' रचे, आदिनाथ संगीत॥
पढ़ो सुनो अथवा करो, श्री आदीश विधान।
विश्व शांति का भाव हो, फिर अपना कल्याण॥

॥ इति शुभं भूयात्॥

आरती

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥

नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आये,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाये।
प्रभु जी सब जन मंगल गाये॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ 1॥

आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराये,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाये।
प्रभु जी मोक्षमार्ग बतलाये॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ 2॥

सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आये,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी झूम-झूम सिर नाये॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ 3॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया॥